ओमशांति! ...लोग शिवोऽहम् कहकर पीछे कहते हैं तत् त्वम्। ऐसे कहना ही पड़े; क्योंकि सर्वव्यापी ज्ञान तो फिर ऐसे ही कहेंगे। यहाँ फिर बाप क्या समझाते हैं? ओमशांति, फिर कहेंगे तत् त्वम्– तुम भी आत्मा हो; क्योंकि बाप समझाते हैं ना कि तुम भी आत्माएँ हो और तुम्हारा स्वधर्म भी शांत का ही है। अभी तुम जानते हो कि बाप परमधाम में रहते हैं। तो ये भी कहते हैं वास्तव में तुम भी परमधाम के वासी हो। तो यहाँ समझने की बात हुई ना। अभी तुम जानते हो कि बाप को हमेशा ज्ञान सागर कहा जाता है। कभी भक्ति का सागर नहीं कहा जाएगा; क्योंकि देखो ज्ञान को भी सागर कहा जाता है। इतना बड़ा कहते हैं जो सागर की कलम फलाना। ये दृष्टान्त देते हैं ना। तो भी नहीं खूटे। अच्छा, भला भक्ति भी कोई कम है क्या! देखो, अभी भक्ति (ही) भक्ति है। ज्ञान तो कोई है भी नहीं बिल्कुल ही और भक्ति के कितने प्रकार हैं। कोई जानते भी नहीं हैं कि ज्ञान किस चीज़ का नाम है। नाम तो कहते हैं ज्ञान; परन्तु वो बिचारे तो इन शास्त्र के ज्ञान को ज्ञान कह(ते) हैं। तो शास्त्रों के ज्ञान से कोई पतित–पावन नहीं होता है। ऐसे कभी नहीं गाते हैं कि शास्त्रों से कोई पतित–पावन हो सकता है। जब ये शास्त्रों से कोई पतित–पावन हो नहीं सकता है; क्योंकि भक्तिमार्ग है, तो भक्तिमार्ग में ये गंगा–जमुना स्नान वगैरह भी है। जब शास्त्र से कोई पतित–पावन नहीं बन सकते हैं तो नदियों से कैसे बन सकेंगे? क्योंकि ये अभी समझने की नई–2 बातें हैं ना। शास्त्र तो बहुत पढ़ते आए हैं, सभी वेद,शास्त्र,ग्रंथ ये तुम बच्चे जानते हो। तुम भी कल ये पढ़ते थे। भक्तिमार्ग के साधन करते थे। अभी भक्तिमार्ग के साधन तुम कोई नहीं करते हो; क्योंकि तुम बच्चों को ज्ञान सागर से, जिसको ही सिर्फ पतित–पावन कहा जाता है। शास्त्रों को भी पतित–पावन नहीं कहा जाएगा। फिर जबकि वो शास्त्र पतित–पावन नहीं हैं तो शास्त्र पढ़ने की दरकार ही क्या है? अगर ये नदियाँ हैं, पतित–पावनी गंगा है तो भला एक को तो पकड़ना चाहिए ना। तो चलो, तभी सिर्फ सदैव गंगा में स्नान करते रहो, फिर शास्त्र नहीं पढ़ो; क्योंकि शास्त्र कोई पतित–पावन नहीं हैं। तो देखो, न शास्त्र पतित–पावन है, न कोई गंगाएँ पतित–पावन हैं। ...शास्त्रों में ज्ञान तो बहुत है। भरे हुए हैं बहुत ही। देखो, जो पढ़ते हैं उनको कहा जाता है ज्ञान का सागर है। कहते हैं अथॉरिटी है, सभी वेदों,ग्रंथों,शास्त्रों की अथॉरिटी। उन्होंने तो शास्त्र पढ़ा हुआ है ना। शांत तो नहीं हुआ, सद्गति नहीं हो सकती है या पतित–पावन नहीं हो सकते हैं। देखो, पतित दुनिया है और शास्त्र पढ़ते रहते हैं और ऊपर कहते हैं– ये शास्त्र परम्परा से पढ़ते आए हैं, वेद,उपनिषद,ग्रंथ,गीता वगैरह। अभी इन बच्चों को ये मालूम तो नहीं है कि फिर भी ये शास्त्र कब से रचे; क्योंकि सतयुग–त्रेता में तो भक्ति है नहीं, तो शास्त्र बिल्कुल होना ही नहीं चाहिए। गीता भी तो फिर भक्तिमार्ग में ही शुरू हुई। गीता भी पढ़ते–2 आए हैं; परन्तु इसको भी पतित–पावनी नहीं कहते हैं। गीता को पतित–पावन ; तो शास्त्रों को कह ही नहीं सकेंगे। पतित–पावन कहा ही जाता है परमपिता परमात्मा को, जो ज्ञान–सागर है। गीता को नहीं कहते हैं। वो आकर जब ज्ञान देते हैं उसका बैठ करके वो शास्त्र बनाया है, जो फिर भक्तिमार्ग वालों ने बनाया है, वहाँ काम होता है। अभी तुम बच्चे जानते हो कि जहाँ देखो, भक्ति–2, प्रेयर्स, मस्ज़िद सभी बनी हुई हैं ना, जिसमें वो लोग जाते हैं। ...मंदिर–टिकाने बने हुए भी हैं, जहाँ आगे जाते थे। अभी नहीं जाते हो। कहाँ भी नहीं जाते हो; क्योंकि वो तो बेहद का बाप है और ज्ञान का सागर है और वो बाप से वर्सा लेने का है। शास्त्रों से वर्सा क्या मिलेगा! वही शास्त्र पढ़ने का वर्सा मिलेगा। जैसे टीचर होते हैं, इनसे क्या वर्सा मिलेगा? एल.एल.बी. पढ़ाएँगे, एम.बी.एस. पढ़ाएँगे, फलाना पढ़ाएँगे। तो वो वर्सा मिलता है उनको; क्योंकि वो भी शास्त्र पढ़कर...फलाना पढ़ा या...पढ़ा, तुम लोगों को भी शास्त्र पढ़ाय करके वो बनाते हैं। तो ये वर्सा मिलता रहता है। देखो, सन्यासियों को भी वर्सा मिलता है, वो फिर सन्यासी हो जाते हैं। तो फिर कोई सन्यासी हैं, कोई फॉलोअर्स हैं जो सन्यास धारण नहीं करते हैं। देखो, यहाँ ज्ञान मार्ग में भी ऐसे ही, कोई तो बच्चे बनते हैं और श्रीमत पर चलते हैं, कोई नहीं चलते हैं। जैसे उनके सन्सायी सन्यास कर ही देते हैं और दूसरे नहीं करते हैं। बोलते हैं हम सन्यास नहीं कर सकते हैं अर्थात् हम पवित्र नहीं बन सकते हैं; क्योंकि सन्यास तो है ही पाँच विकारों का ना। तो देखो, उनमें भी ऐसे ही और यहाँ भी तो बहुत ही हैं जो विकार को सन्यास नहीं करते हैं।

बहुत विकार में जाते हैं, आते हैं, कोई सभी तो नहीं रहते हैं ना। फिर घड़ी–2 गिर पड़ते हैं। तो उनको भी ऐसे ही बाबा कहते हैं कि ये हैं हमारे सगे,मातेले और वो हैं सौतेले, जो पवित्र नहीं बन सकते हैं, बाबा–2 करते हैं। वो भी गुरू–2 करते हैं; परन्तु वो सन्यास नहीं करते हैं। तो ऐसे यहाँ भी है कि सन्यास करते हैं यानी बाबा, तन–मन–धन सब कुछ तेरा है। बाबा कहते हैं– हाँ, ये हो गए मातेले बच्चे। बाकी जो न करते हैं उनको फिर बाबा कह देते हैं सौतेले। तो सन्यासियों के गुरुओं का भी तो ऐसे हुआ ना। कोई तो जैसे कि मातेले बन जाते हैं जो सन्यास धारण कर गेरुवे और कोई तो पवित्र नहीं बनते हैं, फिर उनको क्या कहेंगे? उनको भी कहें कि ये भी सौतेला है। गुरू है तो सही। आते तो हैं ना। बहुत फिर ऐसे हैं जो उन गुरुओं को नहीं जानते हैं। सब थोड़े ही उस गुरु के फॉलोअर्स बनते हैं। नहीं जानते हैं, उनको मालूम नहीं है इनसे क्या शिक्षा मिलती है। तो देखो, यहाँ बाप के पास भी ऐसा ही है ना; क्योंकि ये तो ज्ञान का सागर हो गया। यहाँ तो भक्ति बिल्कुल बंद। भक्ति एकदम मुर्दाबाद कर दी। गायन भी कहा जाता है कि बहुत थोड़े...। देखो, भक्ति के कितने हैं ढेर के ढेर! सब जो भी झाड़ है वो सब भक्ति ही भक्ति। ये सैम्पलिंग लगी है ब्राह्मणों की। तो इनको ब्राह्मण ही समझना होता है अपना। ब्राह्मण वो ; क्योंकि ये सर्वोत्तम धर्म है। इसमें पवित्रता तो पहले चाहिए। यहीं पूरा पवित्र बन करके फिर वहाँ पवित्रता की राजधानी में वो जा सकते हैं। यहाँ तो सज़ा खानी पड़ती है। सुनते हैं थोड़ा ही तो भी जा तो सकते हैं ना। थोड़ा भी सन्यासी कुछ तो हैं ना भला, थोड़ा–बहुत है; परन्तु यहाँ तो सभी को ये देह सहित अहंकार तोड़ना पड़े। यहाँ तो यात्रा की बड़ी कड़ी मंज़िल है। इसको कड़ी यात्रा कहा जाता है। इसको कहा भी जाता है– मीठी ते मीठी, सहज ते सहज; क्योंकि सभी चाहते हैं– निर्वाणधाम में जावें; परन्तु रास्ता किसको मालूम ही नहीं है कि निर्वाणधाम में कैसे जावें। वो तो गपोड़े मार देते हैं कि फलाना निर्वाणधाम में गया, वानप्रस्थ गया, वैकुण्ठ गया। देखो, सब कहते रहते हैं ना। ये जीवनमुक्ति पाई, इसने मोक्ष पाया– ये कहते रहते हैं; परन्तु बाप ने तो आकर बच्चों को समझाया है और देखो, कितने थोड़े बच्चे हैं! बाप भी कोई से मिले कैसे? कहाँ भी जाए तो कोई आ करके बोले– हम महात्मा से मिलना चाहते हैं और वो कहते क्या कहेंगे! ऐसे तो नहीं कहेंगे– हम आपके पिता से मिलना चाहते हैं। अरे, हमारा पिता प्रजापिता ब्रह्मा सो तो तुम्हारा भी पिता है। तो फिर ऐसे कहो कि हम भी प्रजापिता ब्रह्मा से मिलना चाहते हैं; पर तुम कुछ जानते ही नहीं हो, प्रजापिता ब्रह्मा से तो मिलने का है नहीं। प्रजापिता ब्रह्मा से थोड़े ही बच्चों को मिलना है। नहीं, वो तो मिलना है शिवबाबा से। वो तो कुछ भी जानते ही नहीं हैं। तुम्हारा नाम भी लगा हुआ है– प्रजापिता ब्रह्माकुमारियाँ। ये तो तुम जानते हो कि हम शिवबाबा की संतान बने हैं थ्रू ब्रह्मा के। देखो, बहुत ही डिफीकल्ट है ना। समझाना भी ; कोई आवे, बाबा कहाँ भी जावे, नए से मिले कैसे? क्यों मिले? कोई जानते ही नहीं हैं। वो तो ठीक है– महात्मा लोग बैठे हैं, ये मिलते हैं। कोई भी आकर मिले, पाँव पड़ा। अच्छा, आशीर्वाद,कृपा,भला या दो वचन शास्त्र का ही सुनाएँगे, खुश हो जाएँगे। फिर वो जो कायदा है कि गुरू बिगर गत नहीं। फिर कोई न कोई गुरू को बनाय देवें। अच्छा, यहाँ इसके तो बहुत फॉलोअर्स हैं, चलो हम इनके वो बन जाते हैं। बस, यही है ना; क्योंकि इनके बहुत फॉलोअर्स हैं; इसलिए हम भी जा करके बन जाते हैं, गुरू तो कर लेवें ना। गुरू बिगर तो फिर सद्गति होगी ही नहीं। तो देखो, इसको कहा जाता है अंधश्रद्धा। सद्गति भी किसको कहा जाता है वो तो बिचारे कुछ जानते ही नहीं हैं। सद्गति कहते किसको हैं, गति कहते किसको हैं, गुरू लोग ही नहीं जानते हैं। तो ये बाप आकर समझाते हैं ना। ये भी तुम जानते हो कि बाप आएँगे तो सारी दुनिया को तो नहीं बैठकर मिलेंगे, समझेंगे। ये तो झाड़ है, ये दो पत्ते आएँगे, चार पत्ते आएँगे, बढ़ेंगे, उनमें से कोई छन जाएगा, कोई मजबूत बन जाएगा। तूफान लगेगा तो उनमें कुछ छन जाएगा। कोई न कोई तूफान लगता है ना। जैसे देखो, मम्मा का(ने) शरीर छोड़ा, बड़ा तूफान आ गया, कोई न कोई संशयबुद्धि का तूफान। देखो, कहाँ कोई खिटखिट हो गई तो कितने गिर पड़ते हैं, आवाज़ हो जाते हैं, डर जाते हैं। तो इसमें तूफान लगते हैं ना। वो जो भक्तिमार्ग है उसमें तूफान की कोई बात ही नहीं है; क्योंकि वो तो भक्ति है ना। यहाँ तो नया झाड़ स्थापन हो

रहा है। उनको तूफान लगते हैं। देखो, ये नया झाड़ है ना। दैवी झाड़ स्थापन हो रहा है। अभी ये तो सिवाय तुम्हारे और तो किसको मालूम भी नहीं है तो(कि) कोई दैवी झाड़ परमपिता परमात्मा द्वारा स्थापन हो रहा है। कोई भी आवे, आ करके मिले, क्या समझ करके मिलेंगे! ये तो नामी–ग्रामी जवाहरी भी है। बिल्कुल ही अच्छी तरह से सब जानते हैं। नहीं जानते हैं तो सुनते हैं...। अख़बारों में तो बहुत ही पड़ा था ना कि भई, ये कलकत्ते का जवाहरी था। अभी सन्यासी है, कोई राजा, कोई धंधेवाला, कोई फलाना, है तो वो भी ऐसे ही ना। उन्होंने भी जाकर सन्यास तो लिया है ना बहुतों ने ; परन्तु उनका सन्यास फिर भी तो भक्तिमार्ग का; क्योंकि ज्ञान–मार्ग तो कहाँ है ही नहीं बिल्कुल ही। वो सन्यास है। वो ज्ञान से तो सन्यास नहीं करते हैं। उनको तो दुःख होता है, वैराग्य होता है कि ये छी–2 है गृहस्थ व्यवहार में रहना, ये विकार में जाना। ये माताएँ नर्क का द्वार हैं। ऐसे कहते हैं ना।... इसलिए उनको सन्यास...। सो भी बाप ने बच्चों को अच्छी तरह से समझाया कि ये हद का सन्यास है। ये निवृत्तिमार्ग का सन्यास है। ड्रामा में ये भी एक झाड़ की कोई न कोई टाल या टाली है ; क्योंकि झाड़ को भी दिल में, बुद्धि में रखना है ना। ड्रामा में ये सभी झाड़ वगैरह की इतनी नहीं आती है। ड्रामा में तो सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलहयुग, फिर ये तुम समझते हो कि हम 84 जन्म लेते हैं। अभी झाड़ में तो हम बहुत ही दूसरे धर्म के दिखलाते हैं –टार–डार–डारियाँ फलाना। ये जो चक्र है उनमें तो कोई टार–डार–डारियाँ छोटी–2....। तो उनकी समझानी और हो जाती है। इस ड्रामा की समझानी और हो जाती है। देखो, इनमें सन्यास का कुछ लिखा हुआ नहीं है। झाड़ में सब दिखलाते हो पिछाड़ी में मठ–पंथ वगैरह। इसमें तो नहीं हैं ना। तो देखो, झाड़ की भी तो समझानी बच्चों (की) बुद्धि में रहती है ना कि बरोबर ये उल्टा झाड़ है, इनमें ये हमारा फाउण्डेशन है, फिर तीन बड़े दूसरे धर्म हैं और फिर ये छोटे–2 होते ही जाते हैं। झाड़ बढ़ना ही है ज़रूर। उसमें ये मठ–पंथ फलाना, ढेर हैं, अथाह हैं, जो गुरू करते रहते हैं। तो झाड़ का भी ख्याल में आता है नटशेल में। कोई भी हमको नटसेल में रखना है कि तीन मुख्य धर्म हैं। बाकी तो सभी बहुत बिछड़े हैं, ये पत्ते हैं। बाकी मुख्य तो तुम जानते हो कि बरोबर मुख्य है हमारा आदि सनातन देवी–देवता धर्म का। फिर वो तो सबसे बड़ा झाड़ है। वो पुराना फाउण्डेशन है, उनके तो पत्ते भी बहुत होने चाहिए। अच्छा, उनमें भी थोड़े–बहुत ये मठ,सन्यास,आर्य समाज फलाना, ये भी तो यहाँ हैं ना। इनकी भी तो बहुत इण्डिपेडेन्ट शाखाएँ हैं ना। जैसे ये क्रिश्चियन लोग हैं, देखो इनकी भी कितनी...। जहाँ–तहाँ देखो, सभी जो भी धर्म हैं, उनकी फिर भी मल्टीप्लीकेशन छोटी–2 टालियाँ निकली हुई हैं। ये सब भी बुद्धि में रखना होता है ना। ये तो तुम्हारी बुद्धि में आगे नहीं था ना। कोई की भी बुद्धि में नहीं था। ये अभी जान गए हो कि जिसमें बाबा ने प्रवेश किया है वो भी तो बहुत ही पढ़ा–लिखा है, वो भी तो यह नहीं जानते हैं– झाड़ क्या चीज़ होती है, यह ड्रामा क्या चीज़ है, चित्र ही नहीं थे। ये चित्र तो अभी बने हैं ना। वो चित्र तो सभी रॉंग हैं। जो रॉंग चीज़ है उसके बदले में राइट चीज़ तो चाहिए ना। तो देखो, बाप ने बैठकर ये राइट चीज़ बताई है। आगे चलो, त्रिमूर्ति ब्रह्मा कह देते थे। अभी बाप ने आकर समझाया है– ये त्रिमूर्ति जो ब्रह्मा,विष्णु,शंकर हैं, उनका रचयिता तो मैं हूँ ना। मेरे को क्यों गुम कर दिया हुआ है? क्योंकि सबका बाप तो मैं हूँ ना! तुम गाते भी हो भक्तिमार्ग में निराकार परमपिता परमात्मा को कि वो निराकार है। उनका कोई आकार नहीं। यह तो सभी जानते हैं कि बरोबर शिवाय नमः। शिवाय नमः तो उनकी बुद्धि में यही शिवलिंग आता है। कोई शरीर तो नहीं आता है। अगर कहेंगे– ब्रह्मा देवताय नमः, तो ब्रह्मा का सूक्ष्म स्वरूप सामने आता है। वहाँ होना चाहिए स्थूल; क्योंकि ब्रह्मा को बदलते हैं, दाढ़ी देते हैं, मूँछ देते हैं, फलाना करते हैं। उन दोनों को तो क्लीन रखते हैं। ये भी तो बाप ने आ करके बच्चों को समझाया है कि ये त्रिमूर्ति ब्रह्मा, उनमें भी ब्रह्मा क्यों लिखते हैं और उनको प्रजापिता कहते हैं। तो ज़रूर प्रजापिता होगा तो कोई यहाँ का होगा; क्योंकि ये मशहूर है कि देवताओं में ये दाढ़ी–मूँछें नहीं दिखलाते हैं। यहाँ ब्रह्मा को दिखलाते हैं। ब्रह्मा को क्यों? वो तो देवता हो गया, उनको फिर दाढ़ी–मूँछ कहाँ से? देखो, शंकर को भी क्लीन शेव, उनको भी क्लीन शेव और उनको जब बनाते हैं कोई चित्रों में तो दाढ़ी–मूँछ भी दे

देते हैं...। अभी समझते तो बिचारे कुछ नहीं हैं। तो बाप आ करके समझाते हैं...और है भी बहुत समझने की ; क्योंकि ब्रह्मा जब पतित से पावन बनते हैं तो फरिश्ते बन जाते हैं। तो ये लक्ष्मी–नारायण दोनों, ये भी देखो बने हैं ना; क्योंकि ये है ही राजयोग। ये तो समझना होता है ना कि ये जो सतयुग के महाराजा–महारानी हैं, ये ज़रूर जो गीता वाला राजयोग है वो सीखे होंगे। कब सीखे, अभी ये भी देखो शास्त्रों में उण्ड–बुण्ड कर दिया हुआ है। ये तो समझते नहीं हैं कि राजयोग का ज्ञान सो तो ज़रूर इस संगम पर मिला होगा। जो ये राजाए हैं, इनको ज्ञान कहाँ से मिला? मुख्य है ही गीता का ज्ञान। सो ज़रूर परमात्मा ने दिया होगा। देखो, ये सब विचार–कथन बुद्धि में धारण करें, जो खुद को तो पक्का कर देवें, जो फिर किसको कुछ समझा सकें। तुमको भी यही समझाना है कि सतयुग की आदि है और कलहयुग के अंत में तो ये हैं नहीं। ये कोई राजा–रानी ही नहीं हैं एकदम, प्रजा का प्रजा पर राज्य है। और फट से जैसे रात से दिन तो ऐसे ये भी तो है ना। रात से दिन कैसे होता है? बस, रात पूरी हुई दिन। अभी ये भी ऐसे ही है कि बरोबर ब्रह्मा की रात पूरी हो जाती है, दिन होता है। तो ब्रह्मा की रात और दिन, ब्रह्मा रात में तो यही ब्रह्मा है साधारण प्रजापिता। अच्छा, ब्रह्मा दिन में देखते हैं कि बरोबर दिन में तो श्री लक्ष्मी–नारायण का राज्य है। तो ज़रूर ये ब्रह्मा और सरस्वती ये ज़रूर लक्ष्मी–नारायण पढ़ करके पढ़ा(बने) होंगे; क्योंकि नाम भी इनका ही गाया जाता है। सरस्वती को गॉडेज ऑफ नॉलेज कहा जाता है। तो ब्रह्मा को क्या कहेंगे? ब्रह्मा को कुछ तो कहेंगे ना बरोबर; क्योंकि ब्रह्मा की बेटी है ना। तो जब ब्रह्मा की बेटी है, गॉडेज ऑफ नॉलेज कहा जाता है, ज्ञान–ज्ञानेश्वरी है तो भला बाप तभी कौन होगा? बाप भी ज्ञान–ज्ञानेश्वर होगा ना। अभी उनको तो ज्ञान का सागर कहा ही नहीं जाता है। इनको ज्ञान का सागर... वो परमपिता परमात्मा। ज़रूर तभी ब्रह्मा में प्रवेश करे, नहीं तो ब्रह्मा आवे कहाँ से! सो भी ब्रह्मा की बेटी भी ; ब्रह्मा की एक बेटी थोड़े ही, अथाह बेटी और बेटे हैं। सिर्फ एक बेटी तो नहीं है ना। देखो, तुम सभी अभी मास्टर ज्ञान... जैसे सरस्वती तैसे तुम। जो धंधा वो करती थी, अभी ऐसे कहेंगे तुम्हारा भी यही धंधा। अभी भी धंधा तो उसका वही है। पढ़ाती रहती है। सो तो तुम जानते हो कि ये हैं गुप्त बातें। ये भी तो समझ की बात है ना। अभी समझ जब मिली है तब समझते हैं। गाते हैं, चित्र रखा हुआ है, सरस्वती को बैंजो देते हैं कि गॉडेज ऑफ नॉलेज है। अरे, सरस्वती बेटी किसे है? ये तो ब्रह्मा की है। तो ज़रूर तभी बाप को भी ज्ञान होगा। बाप को ये ज्ञान कहाँ से मिला जो बेटी को दिया? तो कहा जाता है ज्ञान का सागर तो शिवबाबा है। ज़रूर उन्होंने ही दिया होगा ना। उन्होंने कैसे दिया? वो तो निराकार है। अभी तुम देखते हो ना कि बरोबर शिवबाबा इसमें प्रवेश करके ज्ञान देते हैं माताओं को और ये भी ज्ञान धारण कर लेते हैं। ये भी बड़ी ब्रह्मपुत्री नदी है। ये नदी कम तो नहीं है ना। ये भी नाम, अभी नाम हम लेते नहीं हैं, शास्त्रों में लिखा हुआ है, उसको समझाकर सिद्ध करते हैं। जैसे शास्त्रों को अभी समझाकर सिद्ध करते थे ये राँग है, ये राँग है, इसमें ये जो कुछ है राँग है, तैसे फिर इस नदियों के लिए भी कह देते हैं ये भी तो राँग हैं। बाकी नाम वगैरह सभी तो उन्होंने रखे हुए हैं ना। बाबा उन नामों को उठा करके समझाते हैं कि ये ऐसे है, ऐसे है, मनुष्य ऐसे कहते हैं। तो बाबा भी समझाते हैं ना कि देखो, अभी भक्तिमार्ग है। सारी दुनिया में ज्ञान का किसको भी पता नहीं है। वो सिर्फ गाते हैं ज्ञान सागर परमात्मा को– पतित–पावन। तो ज़रूर जो ज्ञान सागर होगा वही तो पतित–पावन होगा ना। दूसरा तो हो नहीं सकता है। ज़रूर पतित दुनिया को पावन बनाने वाला वो तो कोई मनुष्य हो भी नहीं सकता है। देवता भी कहीं हो नहीं सकते हैं; क्योंकि देवताओं को भी कोई देवता बनाते हैं। मानुष ते देवता किये किसने? अभी देवताओं को देवता तो नहीं कोई बनाएँगे ना। देवता तो देवता ही है। मनुष्य तो मनुष्य ही है। मनुष्य थोड़े ही कोई बैठ करके किसको देवता बनाएगा। देवता है नहीं, देवता कैसे बनें ? मनुष्य देवता को तो नहीं बनाएँगे ना। नहीं। देवताओं का तो देखो, ये तो रचना ही है बिल्कुल नई, तो उनको बाप ने बनाया होगा। कैसे बनाया ये देखो दुनिया में कोई भी नहीं जानते, जबकि हम भी नहीं जानते थे; क्योंकि हम तो फिर भी ठहरे ना। हम भी भक्तिमार्ग में चले गए; क्योंकि ये सभी भी भक्तिमार्ग में चले गए हैं। नहीं तो बाबा ने समझाया ना कि वो जो

सन्यासी हैं उनको भी भक्ति नहीं करनी चाहिए; क्योंकि वो जब सन्यास करते हैं तो हम गृहस्थी जो काम करते हैं फिर उनको ये काम नहीं करना चाहिए; इसलिए वो ब्रह्म ज्ञानी, तत्व ज्ञानी जंगल में रहते थे। जैसे अभी हम हैं तो शिव से ज्ञान लेते हैं। तो हम कहेंगे– शिवज्ञानी। शिवबाबा हमको ज्ञान दे रहे हैं। हम शिवबाबा को याद कर रहे हैं। अभी वो तत्व, ब्रह्म, वो तो तत्व है, वो कोई ज्ञान तो दे नहीं सकते हैं। इनको ज्ञान क्या मिलता है? कहाँ से मिलता है? ज्ञान कहाँ से मिले? क्योंकि इसको कहा ही जाता है तत्वयोगी, ब्रह्मयोगी। ब्रह्म न भगवान है, न कोई तत्व भगवान है। अभी इनको ज्ञान ; तो ये ऐसे कहते भी नहीं हैं कि कोई तत्व हमको ज्ञान देते हैं या ब्रह्म हमको ज्ञान देते हैं या ब्रह्म और तत्व की श्रीमत। उन तत्वों की मत तो श्रीमत हो ही नहीं सकती है। श्री–आसुरी मत होती है मनुष्य की। तो देखो, ये सभी समझने की बातें हैं बच्चों को। अंदर में ये चलना चाहिए जो बाप भी समझाते हैं। तो इनका मार्ग ही अपना है ड्रामा के प्लैन अनुसार, फिर भी कह देंगे कि ड्रामा में इनका है ये घर–बार छोड़ना और भारत को पवित्रता की मदद करना। सो तो भगवान भी बताते हैं कि अगर ये पवित्र न बनते, पर न बनते का सवाल नहीं है; क्योंकि ड्रामा में नूँध है। ये समझाते हैं ज़रूर पवित्रता चाहिए; क्योंकि भारत जितना पवित्र और कोई भी होता नहीं है; क्योंकि दूसरे कोई खण्ड में पवित्र राज्य तो होता ही नहीं है ना। भारत ही है जिसमें सतयुग के आदि में यथा राजा–रानी तथा प्रजा पवित्र है। अभी वो पवित्र सतयुग के आदि में आए कहाँ से? तब गाया भी जाता है ना– संगमयुगे, मैं आता हूँ संगमयुगे। तो देखो, अभी समझ में आता है। नहीं तो मनुष्य को समझ में नहीं आता है। संगम ज़रूर होना चाहिए; क्योंकि पावन राज्य और कलियुग में पतित राज्य। तो उसका संगम चाहिए। तो देखो, अभी बाप आ करके कहे हैं कि अभी ये संगम है। मैं संगम पर आया हुआ हूँ और मनुष्य बिचारे घोर अंधियारे में हैं; क्योंकि वो समझते हैं संगम कोई पीछे आएगा। सो भी अच्छा, पीछे आएगा, पीछे भी उनको ये मालूम तो है नहीं; क्योंकि ये परमपिता परमात्मा आते हैं और आ करके ज्ञान सुनाते हैं और स्वराज्य स्थापन करते हैं या आदि सनातन देवी–देवता धर्म स्थापन करते हैं– ये तो कोई को भी मालूम नहीं है। मालूम ही नहीं होना चाहिए ना। ड्रामा अनुसार कोई को मालूम नहीं है, नहीं होना चाहिए; क्योंकि ये तो बाप का काम है आ करके ये समझाना। हो...कैसे सके? तो बाप आ करके सब कुछ समझा देते हैं कि ये जो कुछ भी तुम(ने) देखा, सुना, ये ड्रामा। यह सब जो कुछ भी चल रहा है, जो कुछ भी कहते हैं, सब भक्तिमार्ग। ज्ञान रिंचक नहीं। यह भक्तिमार्ग, इसको बिल्कुल कहेंगे ही भक्ति; क्योंकि ज्ञान देने वाला है एक। तो फिर ज्ञान आवे कहाँ से? तो अभी ज्ञान बहुत है। कोई ज्ञान अच्छी तरह से धारण करते हैं, कोई ज्ञान रिंचक धारण करते हैं जो बोल नहीं सकते हैं। तो पढ़ाई हो गई ना। बाप बैठकर समझाते हैं– मैं ज्ञान तो बहुत देता हूँ। बहुत अच्छी तरह से समझाता हूँ। तो देखो, कोई सिर्फ इतना भी नहीं समझा सकते हैं। अच्छा भई, दो बाप हैं। वो तो परमपिता परमात्मा हैं। उनसे वर्सा तो मिलना चाहिए ना। बेहद का पिता है ना। उनसे वर्सा मिलना है। तो बेहद के पिता का वर्सा मिले ही स्वर्ग में। स्वर्ग में मिलेंगे। पीछे स्वर्ग में तो बाप से राजाई मिलनी चाहिए। नहीं तो देखा जाता है कि स्वर्ग में राजा,रानी,वजीर, ये सभी बहुत ही हैं। प्रजा भी साहूकार–गरीब बहुत हैं। तो ज़रूर कोई ने नॉलेज दी है। जिसने–2 जितना अच्छा पढ़ा है वो इतना पद पा लिया है और बाकी कमती–2 पद पा लिया है। तो ये कोई जानते नहीं हैं; पर तुमको समझाया जाता है ना। तुम अभी ऐसे ही जानते हो कि बरोबर कल्प पहले भी ये पढ़ाई के ऊपर ही काम चला है; क्योंकि कोई राजा–रानी गया(बना), तो कोई वजीर बने...। सो तो तुम अभी देखते हो अच्छी तरह से कि हम खुद पढ़ रहे हैं और जितना हम अच्छा पढ़ेंगे, जितना अच्छा औरों को भी पढ़ाएँगे। तुम्हारी भी चान्स आ जाएगी आहिस्ते–2 करके। चढ़ते–2 आखरीन में मुख चलना शुरू हो जाएगा। ऐसे नहीं कि नहीं चलेगा; क्योंकि ये तो महामंत्र है ना। देखो, गुरू लोग क्या देते हैं, मंत्र कान में फूँक देते हैं। ये तो मंत्र नामीग्रामी है; परन्तु वो लोग तो ऐसे ही मन्मनाभव–मद्याजीभव। अच्छा चलो, कोई होगा ना, वैष्णव जो गुरू लोग हैं, या तो श्रीकृष्ण का नाम जपाय देते हैं। कई बहुत हैं गीता वाले जो कह देते हैं मन्मनाभव। भगवान को याद करो तो उनसे वर्सा मिलेगा। अब जानते कुछ

भी नहीं हैं। इसका अर्थ भी नहीं समझाते हैं; क्योंकि खुद नहीं जानते हैं। बाकी मन्मनाभव–मद्याजीभव कह ही देंगे; क्योंकि उन्होंने भगवान का मंत्र लिखा हुआ है। बाकी मन्मनाभव–मद्याजीभव का भले लिखा भी हुआ है कि मामेकम् याद करो। अभी वो लोग मंत्र दे देवे; परन्तु ये तो भगवान खुद आकर कहते हैं कि मुझे याद करो। तो तुम सारी को समझते हो। वो तो सिर्फ सुना–सुनाया जो गीता में लिखा है। वो कह देते हैं और जानते कुछ भी नहीं। मंत्र तो गीता का देते हैं ना, तो समझते हैं कि ये तो गीता की अथॉरिटी है। ये तो जैसे भगवान हैं। ये हमको मंत्र देते हैं– मन्मनाभव, मद्याजीभव। गीता वाला और कौन–सा मंत्र देंगे! ये देंगे। अर्थ क्या है सो कुछ भी नहीं। लिखा हुआ है– मुझे याद करो और चतुर्भुज को याद करो। अभी चतुर्भुज का अर्थ तो वो बिचारे कुछ जानते भी नहीं हैं। .. .ऐसे विष्णु के मंदिर में तो बहुत जाते हैं पूजा करने; क्योंकि ये भी तो भक्तिमार्ग में कान में सुना तो है ना विष्णु का भी। विष्णु के भी बहुत भगत होते हैं जो समझते हैं हम विष्णुपुरी... .। सो भी वहाँ विष्णु के आगे जाकर क्या बोलते हैं? हमको दर्शन दो, चतुर्भुज का दर्शन दो। वो उनसे कोई बादशाही तो नहीं माँग सकते हैं; क्योंकि वो बादशाही तो देने वाला नहीं है। वाह! वो अपनी बादशाही किसको बैठ करके देंगे। देंगे कोई! कहेंगे, हमको बादशाह बना दो। ये भी तो नहीं हो सकता है। ...कितना रोला मचा हुआ है! मंदिर तो सभी हैं। कोई नए नहीं हैं। विष्णु के मंदिर का इनको ये मालूम थोड़े ही रहता है कि लक्ष्मी–नारायण ये राज्य करते हैं, ये एक ही बात है। ये भी कोई नहीं जानते हैं। तुम भी नहीं जानते तो हम भी नहीं जानते। जबकि जो हम थे वो खुद ही नहीं जानते हैं तो दूसरे जान कैसे सकते होंगे! विराट रूप भी जो बनाते हैं उनमें भी जो मुख्य ते मुख्य बात, वो टूटी हुई। जैसे गीता में मुख्य बात– कृष्ण भगवानुवाच, है शिवभगवानुवाच। सारा टूटा हुआ है एकदम। वैसे ही अभी तुम तो अच्छी तरह से बुद्धि में जान गए कि अभी सृष्टि का चक्कर कैसे फिरता है। जो–2 जिस–2 धर्म के हैं वो फिर उसी धर्म में, वहाँ जाएँगे भी, फिर आएँगे भी उसी धर्म में। तो देखो, पहले–2 नंबर में तुम्हीं हो। बाप बैठ करके तुम बच्चों को फिर भी सतयुग के आदि के लिए नॉलेज दे रहे हैं और समझा रहे हैं कि सतयुग के आदि में तुम्हीं थे, तुम्हीं जाएँगे। अब अच्छी तरह से तुम पढ़ाई पढ़ो बाबा से तो जा करके अपना राजभाग फिर से लो। तो जैसे हूबहू बाप बैठकर समझाते हैं ना। ये भी तो जान गए कि भक्तिमार्ग वाले तो कोई जानते नहीं हैं कि परमपिता परमात्मा, पिता है। पिता ही नहीं समझते हैं। सर्वव्यापी है, तो फिर टीचर कहेंगे, फिर कहेंगे टीचर भी सर्वव्यापी है। गुरू है, गुरू भी सर्वव्यापी है। सर्वव्यापी तो हर एक फिर बाप, टीचर और गुरू भी तो बनना चाहिए ना। देखो, बात ही कितनी लम्बी–चौड़ी है! बिल्कुल ही ठहर सके। सिर्फ एक उनको परमात्मा नहीं कहा जाता है। नहीं, हम तो पिता भी कहते हैं, फिर हम कह देते हैं कि वो टीचर भी है। अभी सर्वव्यापी टीचर कैसे होगा! यह भी तो हो नहीं सकता है। फिर कहते हैं गुरू भी है। तो देखो, ये तीन टाइटल तो किसको मिलते ही नहीं हैं। कोई को भी नहीं मिलते हैं। तो नई–2 बातें हैं ना। नई–2 बातें जो हम समझाते हैं, कोई शास्त्र में हैं नहीं। तो वो समझते हैं कि इनको कोई ने पढ़ाया, जैसे और सब्जेक्ट्स हैं। अपन कह देते हैं ना– व्यास ने ये सभी झूठे शास्त्र बना दिए हैं, तभी वो भी कहते हैं कि ये व्यास के लिए कहते हैं झूठे शास्त्र। इन्होंने जो फिर ये गीता बनाई, ये भी सभी झूठी है। बस, ऐसे ठक कह देते हैं; क्योंकि सिवाय बच्चों के और कोई समझ नहीं सके ना। तो वो लोग ऐसे कह देते हैं। तुम तो ऐसे नहीं कह सको ना। तुम्हारे में भी कोई कच्चा–2 होता तो उनको वो उड़ाय देवे कुछ समझा–बुझा करके। ऐसे तो बहुत ही उड़ भी गए; परन्तु जो पढ़ाई में निश्चय बुद्धि होते हैं वो तो थमे रहते हैं और वृद्धि को तो पाना ही है। ऐसे तो नहीं है कि वृद्धि को नहीं पाना है। तुमको समझाने की भी युक्तियाँ बहुत अच्छी मिलती हैं कि बेहद के बाप का भी तो वर्सा चाहिए। अब बेहद के बाप का वर्सा मिलता ही है सतयुग की आदि में। सो ज़रूर सतयुग की आदि में तो वर्सा नहीं देंगे। वर्सा तो फिर भी संगमयुग पर देंगे। तो देखो, कैसे सहज है! अभी तुम पढ़ रही हो। बस, तुम पढ़ करके शरीर छोड़ेंगे और बरोबर जितना पढ़े होंगे उतना तुम्हारा पद हो जाएगा। ये विनाश के समय की बात। अगर कोई बीच में मर जाते हैं तो वो भी समझाया जाता है कि इसने ये–2 काम किया, इसने

ऐसा–2 किया और ये मरा। बस, ये बिचारे संस्कार इतने ही ले गए और अगर फिर आना होगा, जास्ती लेना होगा तो फिर छोटेपन में भी संस्कार कहाँ न कहाँ ले आएँगे। संस्कार ले गए हैं तो ज़रूर फिर कहाँ भी यह आवाज़ सुनेंगे तो फिर जाएँगे उन संस्कार से, फिर जा करके पढ़ेंगे। ऐसे बहुत ही पढ़ते होंगे। ऐसे मत समझो कि नहीं पढ़ते होंगे। जो मर गए हैं, जिनके पढ़ाई के संस्कार ठीक थे वो तो उसी संस्कारों में मरा। मरा तो कहाँ जन्म लिया? ज़रूर कहाँ सेंटर होगा, जहाँ वो जाकर फिर अपनी उन्नति करेंगे; क्योंकि संस्कार के ऊपर तो है ना, जैसे–2 संस्कार हों। ये भी तो रियलिटी के संस्कार हैं। उनको पढ़ाई के संस्कार हैं तो वो फिर भी जाकर कहाँ पढ़ेंगे ज़रूर। जैसी अवस्था होगी ऐसा जन्म लिया होगा, ऐसी अवस्था अनुसार फिर भी आकर पढ़ेंगे। ...अगर तीखा होगा तो फिर ऐसी जगह में जाकर लेंगे जो फिर जल्दी आ करके अपना वर्सा पाएँगे। ऐसे तुम देखते होंगे, आगे चलकर देखेंगे, छोटे–2 बच्चे–बच्चियाँ भी, जैसे कि कोई संस्कार हैं, तुम्हारे से दिल लगती जाएगी, समझाते जाएँगे, उनको बहुत अच्छा लगेगा। ये नॉलेज तो समझ गए ना कि सब भक्ति ही भक्ति है। ज्ञान की बात सिर्फ तुम्हारे से निकल सकती है जो ब्रह्माकुमार–कुमारी होंगी या जो अच्छी तरह से कुछ धारण किया होगा। अभी ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ कोई छापा नहीं लगता है। ये तो समझ की बात है। रहते भी अपने गृहस्थ व्यवहार में। जो ब्रह्माकुमार–कुमारी नहीं हैं, उनके साथ भी गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं ; परन्तु ज्ञान तो उनको मिला है ना, पढ़ते तो वो हैं ना कॉलेज में आ करके। कोई घर में कोई धंधा करता है, कोई घर में कोई पढ़ता है, कोई ऑफिसर है, कोई क्या है, भिन्न–2 हैं ना। तो जैसे दूसरे हैं तैसे इसमें भी तुम घर में हो, तुम नॉलेज ले रहे हो आ करके। दूसरे हैं वो भक्ति करते रहते हैं। कोई का धंधा क्या है, कोई का धंधा क्या है और तुम्हारा फिर, जो गृहस्थ व्यवहार में रहने वाले हो, उनका ये पढ़ने का धंधा है बाप से। कहीं भी जाते हैं हम धंधा तो करते हैं, उसमें कोई शक नहीं। शरीर निर्वाह के लिए तो ज़रूर करना है। बाकी हमको वहाँ पढ़ना है ना। तो हम जाकर पढ़ करके अपनी प्रालब्ध भविष्य के लिए बनाते हैं। खाना–पीना तो घर में ही सबको होना होता है ना। स्कूल में जाना है। तो देखो, बहुत आते हैं स्कूल में, पढ़ करके चले जाते हैं। भई क्या पढ़ते हो? हम पढ़ते हैं भविष्य के लिए और देवी–देवता पद पाने के लिए। ये भी तो बिल्कुल सहज है समझाने का। इनमें मूँझने की तो दरकार है नहीं। पढ़ाई पर अटेन्शन किनका अच्छा जाता है, इनका कम जाता है। देखते हो बरोबर कोई, देखो वो भी बोलते हैं ना– मैं इतना दिन गया। कोई तो देखो, बाबा रजिस्टर मँगाते रहते हैं। हम खुद देखते हैं। नाम तो हैं। बस, महीने में दो/चार रोज़ भी किसका है, 10 रोज़ भी किसका है, 15 रोज़ भी किसका है। 20/25 रोज़ भी किसका रजिस्टर देखें तो उनमें भी ऐसे ही हैं– एबसेन्ट। एबसेन्ट वाले बहुत जास्ती। वो स्कूल में जो पढ़ते हैं ना, उसमें एबसेन्ट वाले इतने नहीं होते हैं। इसमें एबसेन्ट वाले बहुत ; क्योंकि माया के तूफान, बंधन बहुत। यहाँ तो कोई बात ही नहीं है; क्योंकि यहाँ तो तुम हॉस्टल में रहते भी हो। तुमको आना ही है। हाँ, जो वहाँ स्कूल में होंगे, हॉस्टल में रहते होंगे, मास्टर भी पूछेंगे– क्यों? ये यहाँ रहता है, क्या हुआ है? बीमार होगा तो चलो वहाँ बैठ जाते होंगे, नहीं तो रोज़ आएँगे। जो अच्छा पढ़ाई वाला होगा ना, वो बीमार भी होगा तो भी कोशिश करके पढ़ने के लिए आएँगे, जिनको पढ़ाई का...। बाकी वो जो कच्चे–पक्के होंगे वो हॉस्टल में भी पढ़े होंगे; क्योंकि वो भी तो ऐसे ही है ना। कोई पढ़ाई में फुर्त होते हैं (कि) हम क्यों मिस करें! हमारा रजिस्टर क्यों कम एबसेन्ट होवे! कैसे भी जाएगा। हाँ, लाचार होगा तो फिर दूसरी बात है। यहाँ भी ऐसे ही हैं बच्चे। भल रजिस्टर में लाचारी दिखलाते हैं ; पर ये तो बहुत बड़ा स्कूल है, बंधन बहुत हैं। इसलिए बहुत हैं जो रेग्युलर नहीं हो सकते हैं। कोई तो देखो रेग्युलर भी हैं। रजिस्टर देखो तो उनमें बहुत रेग्युलर भी हैं। एक/दो दिन कोई कारण बनता होगा, बन सकता है। बरसात हुआ, फलाना हुआ, बहुत ही बनते हैं। तो इस स्कूल में, यह तो फिर बेहद का स्कूल। बेहद का स्कूल कहाँ गाया हुआ है ही नहीं। गीता में कोई थोड़े ही गाया हुआ है। वो तो लड़ाई का वो दिखला दिया है। ये थोड़े ही है कि इतनी सभी ब्रान्चेज़ होती हैं। मालूम थोड़े ही है। अभी इस समय में तुम अनुभवी हो; क्योंकि प्रैक्टिकल में बाप बैठकर समझाते हैं और यही राइट है और वो

क्या है? रॉंग है; क्योंकि वो भक्तिमार्ग के खाते चले जाते हैं। वो सभी भक्तिमार्ग, शास्त्र वगैरह सब भक्तिमार्ग। उनमें कोई भी ये बात है नहीं बिल्कुल ही। ऐसे थोड़े ही लिखा हुआ है– इतने सेन्टर्स होंगे, नहीं तो भला पढ़ेंगे कैसे? ये भी विचार होने लगता है (कि) एक टीचर पढ़ाने वाला ज्ञान का सागर। अच्छा, दूसरी भी पढ़ाने वाली बहुत ही। तो ज़रूर कोई बहुत पाठशालाएँ होती हों। ऐसे तो हो नहीं सकता है कि लड़ाई के मैदान में कोई कृष्ण ने सिखलाया। ये बातें तो दिखलाई नहीं हैं कि बहुत सेंटर्स थे। वो तो खाली दिखला दिया लड़ाई के मैदान में, और कुछ भी नहीं, खखरा भी नहीं। हाँ, ये दो अक्षर कह देते हैं, फिर पहला अक्षर रॉंग, तो समझानी ही सारी रॉंग। अभी तुम अर्थ समझते हो अच्छी तरह से कि बरोबर हम बाबा को याद करते हैं। बाबा (ने) कहा है– मुझे याद करो तो तुम्हारा विकर्म विनाश हो जाएगा। तो दिल से लगती है। अनुभवी हो ना। तो तुम्हारी प्रैक्टिकल लाइफ है ना। उसको कहा जाता है थ्योरीटिकल यानी ये है आखानी। वो जैसे आखानी सुनते हैं। ये तो तुम खुद हूबहू वही हो ना जो पढ़े थे। भक्तिमार्ग में वही थोड़े ही है जो कह ही नहीं सकते हैं कि ये वही कोई भक्ति है। यहाँ तो तुम वही हो ईश्वर की संतान और बाप बैठ करके तुमको पढ़ाते हैं। कल्प पहले भी तुमने ही पढ़ा था...। पीछे तो हुआ भक्तिमार्ग की सब... । यहाँ यही है; क्योंकि तुम राजाई पढ़ते हो। बाप आ करके तुमको राजाई बनना पढ़ाते हैं। भगवानुवाच मैं तुमको भविष्य सतयुग के लिए महाराजा–महारानी बनाता हूँ। तुम भी जानते हो बरोबर सतयुग में ही तो लक्ष्मी–नारायण होंगे और कहाँ होंगे! तो पढ़ाएँगे कहाँ? तो देखो, इसलिए ये संगम और एक ही संगमयुग के लिए बात है। दूसरे संगमयुग की कोई कथा है नहीं। कोई भी कथा नहीं है संगमयुग में। सतयुग से त्रेता कोई भी कथा की दरकार नहीं है। तुम जानते हो बरोबर वो राजाई बदलाते हैं, और तो कोई बात ही नहीं है और ये धर्म बदलता जाता है। ये एक ही है संगम (जिसमें) नई दुनिया उथल खाती है और बाप आते भी हैं नई दुनिया स्थापन करने। तो देखो, बच्चों का ये विचार–सागर–मंथन चलना चाहिए ना। तो देखो, जो विचार–सागर–मंथन चलाता है उनको तो बाप–टीचर ज़रूर घड़ी–2 याद पड़ेगा ना, जिसने सिखलाया है और खुशी का पारा भी चढ़ता रहेगा और जब विचार–सागर–मंथन करेंगे तभी तो तुम किसको समझा सकेंगे ना, किसको माथे पर कलश रख सकेंगे ना। ऐसे तो नहीं है एक ने ये सभी बातें विचार–सागर–मंथन करके...जो कोई के सिर पर कलश रखा। नहीं, तुम तो बहुतों के सिर पर कलश रखने वाले हो। तुम्हारे ऊपर बाप ने रखा है। तुम दूसरे के ऊपर ज्ञान का कलश रखते जाते हो तो उनकी ज्योत जगती रहें। जब शादी होती है तो बहुतों के सिर पर ढकनी होती है। ये राज़ है। कोई एक की तो बात नहीं है ना; परन्तु वो लोग तो बिचारे ये समझते नहीं हैं। ये तो अभी तुम समझती हो कि हम साजन के पिछाड़ी, ये जो सजनियाँ हैं, सबकी ज्योत जगी हुई है अर्थात् तुम्हारे सिर पर कलश भी है और तुम्हारी ज्योत भी उसमें जगती रहती है। ज्ञान से, योग से ज्योत जगती रहती है ना। तो देखो, योग से कितना धृत तुम्हारे दीवे में पड़ जाता है। पड़ते–पड़ते 21 जन्म का धृत पड़ जाता है। 21 जन्म तुम फिर जाग पड़ती हो और अपना वर्सा पाती हो, जो कुछ भी समझती हो। ये बहुत समझने की बातें हैं। सारा दिन जिनका विचार–सागर–मंथन चलता होगा वो तो समझाएँगे भी। यहाँ ये तो डबल हैं बापदादा। बाबा (ने) तो बता दिया ना– कभी प्वाइंट इनकी आती होंगी, कभी उनकी प्वाइंट आती होंगी। ये बाबा तो कह देते हैं शिवबाबा समझाते हैं, हम भी समझाते हैं। देखो, इसको भी निरहंकार कहेंगे ना– ये तो सब शिवबाबा सुनाते हैं। मैं भी सुन लेता हूँ, कभी–2 मैं भी बोल देता हूँ; परन्तु बोलूँगा फिर भी नहीं शिवबाबा; क्योंकि सभी जानते हैं सेन्टर्स में कि अभी शिवबाबा ब्रह्मा के तन से वाणी चलाते होंगे। ऐसे तो नहीं कोई समझे (या) कहेंगे कि ब्रह्मा वाणी चलाते होंगे। नहीं। फिर देखो, ये भी कह देते हैं कि हाँ, बाबा ही वाणी चलाते हैं और बाबा ही सुनाते हैं। चलो फिर कह देते हैं, ऐसे न कोई समझे कि बाबा तभी क्या करते हैं! बोलते हैं कभी हम भी बीच–2 में थोड़ा बोल देते हैं, नहीं तो है सभी बाबा की समझानी; क्योंकि नई–2 प्वाइंट्स जो आएँगी तो बाबा ही समझाएँगे, ऐसे ही कहेंगे। तुम बच्चों को ये सभी अच्छी तरह से धारण करना है ना जो कोई को समझाय सकें। है तो बहुत सहज बात समझाने की कि ज्ञान सो तो ज्ञान के सागर से मिलेगा। भक्ति में ज्ञान कहाँ से आएगा! जब नाम ही है, तुम खुद कहते हो– ज्ञान दिन और भक्ति रात, तो जब भक्ति रात है उसमें ज्ञान आए कहाँ से? जब ज्ञान है तो भक्ति कहाँ से आवे? तो देखो, ज्ञान भी एक दफा मिलता है। भक्ति की बात नहीं और फिर आधाकल्प भक्ति है ही नहीं

बिल्कुल ही। भक्ति प्रायः लोप हो जाती है एकदम। जैसे ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है वैसे भक्ति भी तो प्रायः लोप हो जानी चाहिए ना। तो बरोबर तुम सिद्ध करते हो कि ज्ञान से सर्व की सद्गति। सो तो ज़रूर दिन हो जाएगा। पीछे जब भक्ति, सर्व की दुर्गति। एकदम तो नहीं होती है ना। दुर्गति होते–2 कलाएँ भी हमारी कमती होती जाती हैं। सीढ़ी भी उतरते हैं। जब चढ़ते हैं तब सेकेण्ड में। वो गाया भी जाता है– सेकेण्ड में चढ़ गया जीवनमुक्ति। गायन भी है। आहिस्ते–2 थोड़े ही चढ़ेगा। कहाँ–कैसे चढ़ेगा, उनका तो कोई युग है नहीं। उनका तो युग है। उतरना होता है द्वापर और कलियुग में। फिर सीढ़ी आहिस्ते–2... क्योंकि जन्म भी है। चढ़ने के लिए जन्म तो है नहीं। बस, एक ही जन्म में, इसी अंतिम जन्म में हम एकदम चढ़ जाते हैं। पीछे 84 उतरना शुरू होता है; क्योंकि नंबर वन में चले जाना है ना। उनमें तो कोई सीढ़ी तो है नहीं। ...फट ये गया, बाप से वर्सा लिया। हैं तो अच्छी–2 समझने की बातें, खुशी भी होती है और फिर दिल भी होती है किसको समझाना; परन्तु ये है ही बच्चों का काम समझाना। बाबा थोड़े ही बैठकर नयों को समझाएँगे। बाबा तो समझते हैं, बाबा वहाँ जाते हैं, बिचारे जानते तो कुछ भी नहीं। वो तो जानते हैं कि वही है। बिचारे इनको तो कोई ऐसे नहीं समझे कि इनमें कोई भगवान है। हमको भगवान से मुलाकात करनी है। नहीं तो बाबा को कहाँ जाने की दिल भी नहीं होती है। बड़े–2 आएँगे, समझो आकर मिलना चाहते हैं। दादा जी से मिलना चाहते हैं, महात्मा से मिलना चाहते हैं। न है महात्मा, न है दादा जी.. कुछ भी नहीं है, कोई भी बात नहीं है। किससे मिलकर के भी क्या करें! बहुत मिले, वो वजीर आते हैं... वो तो समझते कुछ थोड़े ही हैं। बिल्कुल ही उल्लू के उल्लू हैं, बुद्धू के बुद्धू। ये कौन उनसे मत्था मारेगा! बाबा का काम है क्या मत्था मारना ? ये तो बाबा ने मत्था मारा बच्चों से, फिर बच्चों का मत्था मारना है। कोई समझते थोड़े ही हैं, मैं क्यों जाऊँ! बड़े–2 देखेंगे, कोई समझेंगे, पूछेंगे, बाहर वालों से भी पूछेंगे– ये कौन आए हैं? भई हमारा बाबा है, और क्या कहेंगे! वो बाबा का अर्थ समझे ही नहीं बिल्कुल ही कि बाबा कैसे हो सकता है। तुम सबका एक बाबा? अभी बाबा साईं भी वहाँ बहुत मशहूर है। तो वो बिचारे समझ लेते हैं ये भी इनका कोई बाबा साईं है। बस। उनको ये थोड़े ही मालूम है कि ये इनके सच–सच बच्चे हैं और इनसे ये वर्सा मिलता है। बाबा साईं से वर्सा थोड़े ही मिलता है। बोलो– ये कोई वो बाबा साईं थोड़े ही है, जिनके पास ये भगत जाते हैं। नहीं, ये तो बाबा। बाबा माना... बच्चों को वर्सा चाहिए। इनसे वर्सा मिलता है ना। ...शिवबाबा को हम बाबा कहते हैं। देखो, शिवबाबा मशहूर है ना और प्रजापिता भी मशहूर है। तो शिवबाबा से वर्सा मिलता है इन प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा। काहे का? शिवबाबा आकर कहाँ से मिलेंगे? वो तो स्वर्ग के मालिक बनाएँगे ना। अभी ये तो तुम्हारा काम है ना उनको ये समझाना... क्योंकि बहुत हो गए हैं बाबा साईं। कोई थोड़े थोड़े ही हैं, ढेर। ...सब जात में। हिन्दू,मुसलमान,पारसी फलाना, जाओ तो फिर एक बाबा साईं तो दूसरे बन जाते हैं ढेर के ढेर। अंधुँधा है ना, ज्ञान अंधेरा है ना तो किसको बुद्धि में बैठता ही नहीं है। तुम्हारा भी देखो कितनी मुश्किलात से कोई–2 की बुद्धि में बैठता है। माया पुरुषार्थ नहीं करने देती है। माया झूठ के तरफ में ले जाती है। माया देही–अभिमानी बनने नहीं देती है। घड़ी–2 सारा प्राण चला जाता है जैसे अपने मित्र–संबंधियों के पिछाड़ी। बाबा कहे– नहीं, तुम अपने इनको समझाओ, पहले ज्ञान के लिए मत्था मारो, जितना चाहिए इतना। तो सर्विस करनी चाहिए ना। अच्छी तरह से समझना है, औरों को समझाना है। फिर कोई यहाँ आते हैं। ये तो फिर भी हेड ऑफिस है, यहाँ भी तो बहुत आते हैं। यहाँ भी बहुत आवें, अगर कोई युक्ति रची हुई हो तो बहुत आएँगे। कुछ न कुछ करेंगे। इस बारी कुछ प्रबंध करेंगे तो बहुतों का कल्याण हो। विचार तो रहता है ना। वो बिचारे सुनते हैं कि हम जाते हैं, वहाँ तो नाम भी नहीं है। हम गए आबू में हो करके, हम(ने) तो कुछ सुना भी नहीं कि कोई आश्रम वहाँ है, (नहीं) तो हम जाते थे। तो बच्चों को कुछ न कुछ युक्ति भी करनी चाहिए। कभी कहते हैं– अच्छा, यहाँ प्रदर्शनी का एक रख दो। भला मैं एक आदमी को रख दूँगा। गोप को ही रख देंगे जो समझाते रहेंगे। फिर जाओ हेडऑफिस में। ब्रान्च ऑफिस, हेड आफिस भी तो होती है ना। कोई–2 दुकान होती है ना, बड़ी दुकान भी होती है, छोटी दुकान भी होती है। छोटी दुकान में जाते हैं ना.... अच्छा चलो, मैं तुमको अपना कार्ड देता हूँ। बड़े ऑफिस में जाओ वहाँ स्टॉक बहुत है। ऐसे भी तो कर सकते हैं ना यहाँ भी। तो यहाँ भी कुछ होना चाहिए। बाबा तो डायरेक्शन देंगे, अब ये डायरेक्शन्स पर कोई अमल लावे ना। बाबा तो नहीं जाएँगे कहाँ। बाबा तो अभी भी कहते हैं भई, कहाँ न कहाँ दुकान लेकर

प्रदर्शनी लगा दो और एक अच्छे मेल को बैठा देंगे, वो बैठ करके समझाएँगे। फिमेल से कोई बकवाद नहीं करे। आजकल गुण्डे बहुत हो गए हैं। हमारे पास अच्छे मेल हैं जो ये भी सम्भाल सकें। सिर्फ प्रबंध नहीं मिलते हैं। तभी तो आजकल बाबा कहते हैं– ...वहाँ दिल्ली है ना। मुख्य स्थान है वो दिल्ली। तुम्हारी कैपिटल भी दिल्ली बननी है। ...चलो वहाँ एक दुकान निकाल लो कहाँ। पीछे ब्रान्चेज तो बहुत ही हैं। तुम्हारे घर के बाजू में गली में भी ब्रान्चेज हैं। चलो, दिन में फुर्सत नहीं है तो वहाँ जाकर रात को समझना, सुबह में समझना। तो कोई हर्जा नहीं है। चित्र ज़रूर रखना है। वण्डरफुल चित्र हैं। चित्र जो कोई भी ...देखेंगे और अगर पढ़ेंगे, सभी तो एक समान नहीं होते हैं ना, जो भी कुछ न कुछ होगा कोई, तो ये जो कोई पढ़े तो इसमें बहुत नॉलेज है, बहुत–2 नॉलेज है। बाबा कहते हैं ऐसे भी कोई कर सके तो हमको समाचार देवे। हम प्रबंध कर देंगे। कम से कम चार/छः ये चित्र तो अंग्रेजी में और हिन्दी में तो रखना ही होगा। दो लैंग्वेज़ेस। बाकी कोई भी दूसरा लैंग्वेज़ वाला होगा तो कोई न कोई गुजराती वगैरह कोई न कोई सेन्टर पर रहता ही है, वहाँ भेज देना। तो ख्याल चलना चाहिए ना कि हम सर्विस को कैसे बढ़ावें। डायरेक्शन्स बाबा देते हैं, बाकी बढ़ाना तो बच्चों का काम है। बाबा को समाचार देना चाहिए। बाबा बच्चों को बार–2 कहते हैं कि राय निकालो– सर्विस कैसे वृद्धि को पाए। फिर राय निकालते हैं, फिर कोई की कच्ची, कोई की पक्की होती है, तो कच्ची वाले को बोल देते हैं कि पक्के वाले के पास जाओ। तुम्हारी ये राय मुझे ध्यान में नहीं आती है। तो फिर वहाँ भेज देते हैं (कि) जगदीश के पास जाओ। जो कुछ चिट्ठी लिखते हो, जगदीश के पास जाओ। कोई तो चरिये–खरिये हैं, बिगर पूछे जहाँ आते हैं तहाँ भेज देते हैं। वो भी तो बाबा जानते हैं कि जिसके पास जाती है और वो फेंक देते हैं। बाकी ये चित्र तो चोप–चीनी है। चित्र के लिए बाबा का बहुत लव है, हर एक चीज़। फिर भले एक बनावे, चलो दूसरी प्वाइंट्स मिलती रहती हैं, दूसरी बनाएँगे, तीसरी बनाएँगे। कोई कैसा बना देते हैं, भले अर्थ निकलता है; पर चित्र भी तो अच्छे होने चाहिए। चित्र अपना जो भी एक दफा पहला अच्छा बना हुआ है बस वही चलते आना चाहिए। नहीं तो बोलेंगे– ब्रह्माकुमारियाँ वहाँ जाती हैं, कोई साक्षात्कार कैसा करके आती है, कोई कैसा साक्षात्कार, कोई का फीचर्स कैसा, कोई का फीचर्स कैसा, ऐसे कैसे हो सकता है? फीचर्स नहीं बदलना चाहिए ना। कम से कम बाबा का तो है ही फिचर्स ज़रूर। विष्णु का कभी नहीं फिरना चाहिए। शंकर का कभी नहीं फिरना चाहिए। तो कृष्ण का भी कभी नहीं फिरना चाहिए। ये जो चित्र हैं ना, ये कभी भी फिरना नहीं चाहिए। पीछे कोई कैसा बनाते हैं, कोई कैसा बनाते हैं, क्या करें! नहीं तो बिल्कुल एक्यूरेट चाहिए। नहीं तो मनुष्य कहेंगे कि ये कहाँ से बनाया? भई साक्षात्कार।..... तुम्हारे चित्र में कहाँ हम देखें तो उनके फीचर्स ही फर्क देखने में आते हैं। देखो, फीचर्स भी बहुत एक्यूरेट चाहिए ना। अभी ये एक्यूरेट बाबा तो नहीं जाकर कहाँ बनाएँगे। ये तो बच्चों का काम है सम्भालना, जिसके लिए बाबा कहते हैं इकट्ठे ही बनाओ। पीछे तोड़ना होगा तो ठोंक कर इकट्ठे ही तोड़ देंगे। ये भी ड्रामा में होगा टूटना तो तोड़ डालेंगे, दूसरा बनाएँगे कोई चीज़। बाकी फीचर्स तो वही है, बाकी नॉलेज फिर सकती है। फीचर्स तो नहीं फिराना है ना। तो यहाँ फीचर्स भी फिराय देते हैं। बच्चों का फीचर्स फिराय देवे तो भी कोई हर्जा नहीं। बाकी जो साक्षात्कार की बात है उनमें तो फर्क नहीं होना चाहिए ना। ये भी बिचारे कच्चे–पक्के हैं। अभी महेन्द्रा को ये ज्ञान तो पूरा नहीं है ना कि ये फीचर्स ऐसे बनना चाहिए। ये तो बाबा को मालूम है कि फीचर्स एक रखना चाहिए। फर्क नहीं करो। ...यहाँ बनाकर डाल सकते हैं। पूछते रहते हैं त्रिमूर्ति मार्ग–त्रिमूर्ति मार्ग। बिचारे जानते नहीं हैं त्रिमूर्ति क्या। तो हम वहाँ ही एकदम कोई चित्र लगा देवें त्रिमूर्ति शिवजयन्ती। त्रिमूर्ति जयन्ती तो कोई मानते भी नहीं हैं। शिव की मानते हैं। उनको मालूम नहीं है कि शिव के साथ ये तीन भी आने के हैं ज़रूर। तुम देखो बताते हो ना– त्रिमूर्ति शिव जयन्ती कि शिव आकर फट से ये इंसान द्वारा नॉलेज देते हैं। वो एम–ऑब्जेक्ट है और विनाश होने का है। वो सब दिखलाते हैं...।